



■ कोचिंग सेंटर के प्रसार, इससे पैदा सामाजिक मुद्दों की समीक्षा करेगी संसदीय समिति -10



■ केंद्रीय उद्योग मंत्री गोयल ने कहा- भारत-कनाडा एफटीए गर्ता फिर करेंगे शुरू -10



■ निहित स्थायों के लिए आपाराधिक न्याय तंत्र के दुष्पर्याग की निंदा होनी चाहिए -11



■ दूसरे टेस्ट में भी हालत पतली, बल्लेबाजों की गैर जिम्मेदारी से 201 रन पर सिमटा भारत -12

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

कानपुर |

मंगलवार, 25 नवंबर 2025, वर्ष 4, अंक 95, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 5 रुपये

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

■ लखनऊ ■ बैदी ■ कानपुर
■ गुरुदाबाद ■ अयोध्या ■ हल्द्वानी

Since 1980
Goldiee
GROUP
KANPUR (UP)

जहाँ जाए
क्रिकेट बनाए



KITCHEN KING MASALA

शूष्यशाल क्रिकेट



मसाले•अचार•चाय•पापड़•गुलाब जामुन मिक्स•सेवईयाँ•वन-वन नूडल्स•अगरबत्ती•धूपबत्ती•पूजाकिट आदि



AVAILABLE ON



www.goldiee.com

[f /goldieegroup1980](https://www.facebook.com/goldieegroup1980)

[i /goldieegroup](https://www.instagram.com/goldieegroup)

[X /goldieegroup](https://www.twitter.com/goldieegroup)

[in /goldieegroup](https://www.linkedin.com/company/goldiee-group)

अत्यावश्यक अपील

जी-20 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दुरुपयोगों को रोकने के लिए एक वैश्विक समझौते की अपील वर्षमान भू-राजनीतिक और तकनीकी परिस्थितियों में अलंकृत महत्वपूर्ण और समयोचित है। एआई आधारित प्रणालियों को दुनिया जिस तरीके से अपना रही है, उसी गति से दुरुपयोग की आशंकाएं भी बढ़ी हैं। चाहे वह चुनावी हस्तक्षेप हो, साइबर हमले, डीपफेक प्रोपोर्टी या आर्थिक अपराध। ऐसे में इस मुद्दे को जी-20 के उच्चतम राजनीतिक मंच पर उठाना साभित करता है कि भारत तकनीकी नैतिकता और मानव सुरक्षा को लेकर वैश्विक नेतृत्व की भूमिका में आना चाहता है।

जी-20 के दोनों सें लेकर यूपांप, भारत, यापन और आंदोलनिया तक सभी डीपफेक, डेटा चारी, साइबर प्रॉटोकॉल और डिजिटल चुनावी हेरेकर जैसी तमाम चुनौतियों का समाना कर रहे हैं। भारत खुद सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में डीपफेक के जोखियों को झेल रहा है। मतलब यह समस्या सार्वभौमिक है और इसे राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर रहकर हल नहीं किया जा सकता। साइबर युद्ध में एआई हथियार बन रहा है। आतंकवादी संगठन एआई मॉडल्स का उपयोग भर्ती, फेक आइडेंटिटी, हैकिंग और ड्रोन अपरेशन के लिए करने लगे हैं। यदि संयुक्त नियम नहीं बनाए गए, तो तकनीकी अराजकता वैश्विक स्थिरता के लिए खतरा बन सकती है, इसीलिए प्रधानमंत्री मोदी द्वारा डेटा सुरक्षा, एआई डेवलपमेंट, एथेक्स और डीपफेक नियंत्रण जैसे मानकों पर वैश्विक संधि का प्रस्ताव एक नियंत्रक कदम हो सकता है, क्योंकि यह तकनीकी समाधान के साथ-साथ राजनीतिक इच्छाशक्ति का भी प्रसन्न है। जी-20 देश सिलकर ग्लोबल एआई रेजिस्टर, क्रॉस-वर्डर साइबर और एटेक प्रोटोकॉल और डीपफेक ट्रैकिंग नेटवर्क जैसे कई मॉडल विकसित कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी का यह कहना कि महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों वित्त-केंद्रित की जगह मानव-केंद्रित होनी चाहिए, बहुत दूरगामी सोच है। यह मुनाफे को प्राथमिकता देने वाली पूरी संचालित टैक-इकोसिस्टम कंपनियों की उन खामियों की ओर इशारा है, जिसका दुष्प्रभाव समाज, गोपनीयता तथा नैतिकता पर पड़ता है। मानव-केंद्रित तकनीक का मतलब है, समावेशी डिजाइन, डिजिटल सुरक्षा, पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक हित को सर्वोपरि रखना। बदल चुके भू-राजनीतिक परिवर्ष में प्रधानमंत्री का सुनुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बदलाव की अनिवार्यता पर जोर उचित है। भारत जैसे देशों की आर्थिक, जनसांख्यिकी और राजनीतिक भूमिका आज पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली है, लेकिन वैश्विक छवि मजबूत होने के बावजूद भारत की सुरक्षा परिषद में स्थानीय सदस्यता आसान नहीं, क्योंकि यह मौजूदा शक्तियों, विशेषकर चीन की राजनीति और वीटो संरचना से जुड़ा सबल बन जाता है। इधान-मन्त्री ने इब्बा यानी भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रिका की भूमिका भी रेखांकित की, ये मिलकर ग्लोबल साउथ के आवाज को मजबूत कर सकते हैं और संयुक्त राष्ट्र सुधार पर सामुहिक दबाव बढ़ा सकते हैं। तीनों देशों की लोकतांत्रिक साख और उभरती अर्थव्यवस्थाएं इस दिशा में नैतिक और राजनीतिक जोर प्रदान कर सकती हैं।

प्रसंगवाद

तेग बहादुर सी क्रिया करी न किनहूं आन

संसार भर के इतिहास में ऐसी कोई मिसाल नहीं मिलती कि किसी महापुरुष ने दूसरे धर्म के लिए अपनी कुर्बानी दी हो। सिखों के नैवें गुर सिवंद की जी गुर तेग बहादुर जी का प्रकाश (जन्म) माता नानकी जी की कोखु से सिखों के छठे गुर मीरी पीरी के मालिक गुर हरि गोविन्द सहिब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तलवार के धनी होने के कारण पिता गुरु हरिगोविंद जी ने इनका नाम तेग बहादुर रखा।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी का प्रकाश (जन्म) माता नानकी जी की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तलवार के धनी होने के कारण पिता गुरु हरिगोविंद जी ने इनका नाम तेग बहादुर रखा।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तीनों देशों की लोकतांत्रिक साख और उभरती अर्थव्यवस्थाएं इस दिशा में नैतिक और राजनीतिक जोर प्रदान कर सकती हैं।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तीनों देशों की लोकतांत्रिक साख और उभरती अर्थव्यवस्थाएं इस दिशा में नैतिक और राजनीतिक जोर प्रदान कर सकती हैं।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तीनों देशों की लोकतांत्रिक साख और उभरती अर्थव्यवस्थाएं इस दिशा में नैतिक और राजनीतिक जोर प्रदान कर सकती हैं।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तीनों देशों की लोकतांत्रिक साख और उभरती अर्थव्यवस्थाएं इस दिशा में नैतिक और राजनीतिक जोर प्रदान कर सकती हैं।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तीनों देशों की लोकतांत्रिक साख और उभरती अर्थव्यवस्थाएं इस दिशा में नैतिक और राजनीतिक जोर प्रदान कर सकती हैं।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस्त्र विद्या के विशेषता तक लेता चलाना में उनको महारत हासिल थी। तीनों देशों की लोकतांत्रिक साख और उभरती अर्थव्यवस्थाएं इस दिशा में नैतिक और राजनीतिक जोर प्रदान कर सकती हैं।

जब हिंदू संस्कृति मुगलों के हमलों की मार सहारे में असमर्थ

महसूस करने लगी, तकालीन बादशाह औरंजेब की जिद थी कि वह भारत में केवल इस्लाम धर्म ही रहने देगा। कर्मसीरी पंडितों पर बढ़ते दबाव के कारण पंडित कृपा राम की अगाजी में औरंजेब जी के घर पहली अंग्रेज 1621 को अमुतरर सहिब में हुआ। बचपन उनका राजकुमार जैसा ही व्यतीत हुआ। शस्त्र विद्या उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी, बहुत उदाहरणों के बावजूद शस

न्यूज ब्रीफ

एंटी हाईजैकिंग मॉक

ड्रिल का आयोजन

चित्रकृत एक प्रारंभिक मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। अधिकारियों ने बताया कि इस ड्रिल का उद्देश्य हाईजैकिंग जैसी आपातकालीन परिस्थिति में तैयार प्रतिक्रिया, समन्वय तथा सुरक्षा की क्षमता का परीक्षण करना था। ड्रिल के दौरान एक प्रारंभिक प्रावासन, एक प्राप्ति-सप्ताह, जिला पुलिस, रक्षास्थ, दमकल तथा अन्य सर्वोच्चित विभागों ने भाग लिया। इस दौरान यात्रियों की सुरक्षा, सांदिग्धों की पहचान, बचाव कार्यों की इंटर-एंटी-ड्रिल तथा सुरक्षा की क्षमता का परीक्षण करना था। ड्रिल के दौरान एक प्रारंभिक प्रावासन, एक प्राप्ति-सप्ताह, जिला पुलिस, रक्षास्थ, दमकल तथा अन्य सर्वोच्चित विभागों ने भाग लिया। इस दौरान यात्रियों की सुरक्षा, सांदिग्धों की पहचान, बचाव कार्यों की इंटर-एंटी-ड्रिल तथा सुरक्षा की क्षमता का परीक्षण किया गया।

चित्रकृत एक प्रारंभिक प्रावासन ने बताया कि इस प्रकार की मॉक ड्रिल समय-समय पर आयोजित की जाती रही। कि सुरक्षा मानकों को और मजबूत किया जा सके।

डीएम से पश्च अस्पताल

शुरू कराने की मांग

चित्रकृत। रुखमा खुट्टे के ग्रामीणों ने पश्च अस्पताल को संचालित करने के लिए जिलाधिकारी को पत्र भेजा है। ग्रामीणों मुख्यमंत्री कुमार, अनुपम, व्यासु अधिकारी सिंह, जिलाधिकारी भरतलाल, वंदेश्वर आदि ने बताया कि पाता क्षेत्र में यह पश्च अस्पताल कई साल से बनकर तैयार है। उपर्योग न होने से भवन जर्जर हो रहा है। मांग की कि अस्पताल को हैंडोवर कराया जाए, जिससे यह शुरू हो।

शराब के साथ आरोपी

गिरफ्तार

राज्यांतर (चित्रकृत)। एसआई नरेंद्र यादव ने लोकल निवाद पुरुष रामनाथ निवासी बरामदीपुरा को 20 अंदर देशी पातुच शराब के साथ गिरफ्तार किया। आरोपी पर आवाकारी अधिनियम के अंतर्गत अधियोग पंजीकृत किया गया। पुलिस टीम में आशीर्वाद दिलाया गया।

पुलिस ने विद्यार्थियों को

बताए यातायात के नियम

रामनाथ (चित्रकृत)। यातायात माह जारीकर्ता अधिनयम के तहत थाना रेपुरा की पुलिस टीम ने सोमवार को महात्मा गांधी विद्यालय की यातायात के नियम बताए। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों की यातायात नियमों की जानकारी दी गई। सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए सावधानियां अपनाने की सलाह दी गई। बतायों ने वाहन चालने से समय हैन्डरिट पैसे सीट बैल के प्रयोग, नवालिंगों द्वारा वाहन न लगाने, नशे की चालने में ड्राइविंग से बदने वाला सड़क पर नियमित गति सीमा का पालन करने के लिए आगाह किया। थाना प्रभारी ने विद्यार्थियों को यातायात नियमों का पालन करने और अपने परिवार व समाज को भी इसके प्रसार करने का संदेश दिया।

सितापुर (चित्रकृत)

सितापुर (चित्रकृत)

प्रदेश उपाध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय पुरुषोत्तम दास टंडन

पत्रकार महासंघ जूनियर हाईस्कूल

की प्रधानाध्यापक और अन्य परिवारीजनों ने इसका आयोजन किया। देर शामतक की याद में सोमवार को प्रजापाति धर्मशाला में भंडारे का आयोजन किया और उनके चित्र पर माल्यांपण करके श्रद्धांजलि अपूर्ण की।

सितापुर (चित्रकृत)

सितापुर (च

500 वर्ष के लंबे संघर्ष और हिंतजार के बाद 25 नवंबर को वो शुभ घड़ी आ गई, जब देश-दुनिया के आस्था के केंद्र प्रभु श्रीराम की नगरी अयोध्या में भव्य राम मंदिर पूर्ण हो जाएगा। बाबर की शह पर 1528 में रामनगरी में जिस मंदिर को तोड़ दिया गया था, वहां भव्य श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण की पांचवीं सदी से चली आ रही प्रतीक्षा समाप्त होने का ऐतिहासिक पल आ गया है। 25 नवंबर रामलाला को शुभ मुहूर्त दोपहर 12 से 12:30 बजे के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर के 191 फिट ऊंचे शिखर पर सूर्य के मध्य अंकित 'ॐ' वर्कोविदार वृक्ष का केसरिया ध्वज चढ़ाएंगे और श्रीराम मंदिर निर्माण कार्य पूरा होने की घोषणा करेंगे। 9 नवंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की बैठक द्वारा श्रीराम जन्मभूमि के पक्ष में फैसला सुनाने के बाद 25 मार्च 2020 को पूरे 28 साल बाद रामलला टैट से निकलकर फाइबर मंदिर में शिफ्ट हुए थे। इसके बाद 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम जन्मभूमि परिसर में भूमि पूजन कर श्रीराम मंदिर निर्माण की आधारशिला रखी। इसके बाद 22 जनवरी 2024 को रामलला की मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा हुई। आज करोड़ों लोग भगवान राम के दर्शन के लिए अयोध्या आ रहे हैं। आज जो भगवान के दर्शन हो रहे हैं, उसके पीछे दशकों तक चली लंबी कानूनी लड़ाई है। राम मंदिर निर्माण का सफर काफी चुनौतियों भरा रहा है। बाबरी विवाद, अदालतों में चली लंबी लड़ाई और फिर शीर्ष अदालत के फैसले के बाद मंदिर का निर्माण शुरू हुआ।

विवेक सचेवेन
अयोध्या

राम नगरी अयोध्या अलौकिक से अद्भुत हुई

इतिहास में दर्ज हो रही है एक-एक तिथि

राम मंदिर शिलान्यास, फिर प्राण प्रतिष्ठा और अब ध्वजारोहण। एक एक तिथि अब इतिहास में दर्ज हो रही है। अयोध्या की अलौकिकता अद्भुत बन गई है। शिलान्यास के बाद से रामनगरी में निरंतर विशिष्ट आयोजनों की श्रृंखला नए कीर्तिमान गढ़ रही है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जहां रामात्मक के रंग शिंति पर छाए थे, वहां योगी सरकार द्वारा लगातार आब भव्य दीपोत्सव के आयोजनों ने अयोध्या को विश्व पट्टल पर एक अच्छादित कर दिया। अब जब राम मंदिर पूर्ण स्वरूप में अपनी आभा बिखेर रहा है, तो 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा होने वाला ध्वजारोहण अनुष्ठान उत्सव रामनगरी के लिए ही नहीं, बल्कि सनातन समाज के आळादित कर देने वाला है।

राम जन्मभूमि पर बने भव्य राम मंदिर ने अब अपना पूर्ण स्वरूप धारण कर लिया है। शिलान्यास के पाश्च क्षण से शुरू हुई यात्रा अब ध्वजारोहण के साथ एक स्वर्णिम अद्याय लिखने को तैयार है। 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं भगवा ध्वज चढ़ाकर मंदिर को पूर्णता प्रदान करेंगे। यह आयोजन केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि पांच सदी के संकल्प की प्रगतिका तैयारी है। 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री ने जब राम मंदिर का शिलान्यास किया था, तब करोड़ों रामभक्तों की आंखें नम थीं। उस दिन अयोध्या ने सदियों का इंतजार समाप्त होते देखा। इसके बाद 22 जनवरी 2024 को प्राण प्रतिष्ठा के साथ रामलला अपने नवीन मंदिर में विवाहित करने के लिए आयोजित नहीं हो सकते।

■ 1885: जब अदालत पहुंची राम के लिए एक-एक घंटे की बात

1858 में दुर्द लड़ाई के 27 साल बाद 1885 में राम जन्मभूमि के लिए लड़ाई अदालत पहुंची जब अदालत के महत रुबर दास ने फैजाबाद के न्यायालय में खायित को लेकर दीवानी मुकदमा दायर किया। दास ने बाबरी दांवे के बाहरी अंग में रित राम चूतर पर बने अस्थायी मंदिर को प्रवक्ता बनाने और छत डालने की मांग की। जब ने फैसला सुनाया कि वह दुहुओं को पूजा-अर्चना का अधिकार है, लोकिन वे लिताधिकारी के फैसले के खिलाफ मंदिर को प्रवक्ता बनाने और छत डालने की अनुमति नहीं दे सकते।

■ 1949: मूर्तियों का अलग-अलग

देश के आजाद होने के दो साल बाद 22 दिसंबर 1949 को दांवे के भीतर गुंबद के नीचे समाला की मूर्तियों का प्रकटीकरण हुआ। हिन्दू पक्ष का कठन था कि राम प्रकट हुए, जबकि मूर्तियों में आरोप लगाया था कि किसी ने रातों-रात मूर्तियों रख दी। इसके बाद इसे विवादित दावा मानकर ताला लगवा दिया गया।

■ 1950: आजादी के बाद पहला मुकदमा

आजादी के बाद पहला मुकदमा हिन्दू महासभा के सदस्य गोपाल सिंह विश्वारद ने 16 जनवरी, 1950 को सिविल जन, फैजाबाद की अदालत में दायर किया। विश्वारद ने दांवे के मुख्य गुबद के नीचे रित भगवान की प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना की मांग की। करीब 11 मीटर बाद 5 दिसंबर 1950 को ऐसी ही मांग करते हुए रामदर्श परमहंस से सिविल जन के द्वारा मुकदमा दर्खिल किया। मुकदमे में दूर्वा पक्ष को सर्वान्वयन पर पूजा-अर्चना में व्यायालय ने मूर्तियों पक्ष को पूजा-अर्चना में बाधा डालने से रोकने की मांग रखी। 3 मार्च 1951 को गोपाल सिंह विश्वारद मामले में न्यायालय ने मूर्तियों पक्ष को पूजा-अर्चना में बाधा डालने की हिदायत दी। ऐसा ही आदेश परमहंस की तरफ से दायर मुकदमे में भी दिया गया।

■ 1959: निर्माणी अखाड़े में मारी पूजा-अर्चना की अनुमति

17 दिसंबर 1959 को रामानंद संघदय की तरफ से निर्माणी अखाड़े के छह व्यक्तियों ने मुकदमा दायर कर इस न्यायालय पर आजाद दावा लोका। यारी ही मांग रखी थी कि रिसर्वर प्रियदर्श राम के लिए उन्हें पूजा-अर्चना की अनुमति दी जाए। यह उनका अधिकार है। दुहुओं की कड़ी में एक और मुकदमा 18 दिसंबर 1961 को दर्ज किया गया। ये मुकदमा उत्तर प्रदेश के केंद्रीय सुनीव बोर्ड द्वारा दायर किया। कहा कि यह जग्नी भूमिका द्वारा लड़ाई के अंदर से लेकर मामलों को दे दिया जाए। दांवे के अंदर से मूर्तियों हटा दी जाए। ये मामले न्यायालय में चलते रहे।

■ 1982: हिंदू धर्मस्थलों की मुक्ति का अभियान

1982 वो साल था जब विश्व हिंदू परिषद ने राम, कृष्ण और शिव के स्थलों पर भवित्वों के निर्माण को साजिश कर दिया और इनका एक दलील-में संत-महात्मा, हिंदू नेताओं में अद्यतीने के श्रीराम जन्मभूमि स्थल की मुक्ति और ताला खुलवाने को आंदोलन के फैसला किया।

■ 1986: परिषद का ताला खुला

कानूनी लड़ाई में एक फैसला 1 फरवरी 1986 को आया जब फैजाबाद के जिला न्यायालय के पांच पांडे ने राम जन्मभूमि स्थल की मुक्ति और ताला खुलवाने का आदेश दे दिया। फैसले के खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ केंद्रीय धर्मस्थलों के बारे में दावा लगाया गया।

■ 1989: राम जन्मभूमि पर मंदिर का शिलान्यास से भव्य निर्माण तक

मंगलवार, 25 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

9

शिलान्यास से भव्य निर्माण तक

1989: राम जन्मभूमि पर मंदिर का शिलान्यास

जनवरी 1989 में कुंभ मेले के दौरान मंदिर निर्माण के लिए गंगा-गंगा शिलान्यास के फैसला हुआ। साथ ही 9 नवंबर 1989 को श्रीराम जन्मभूमि स्थल पर मंदिर के शिलान्यास की घोषणा की गई। कार्यी विवाद और खीलतान के बाद तकालीन धर्मस्थल की राजीव गांधी ने शिलान्यास की इंजाजत दी दी। बिहार निवासी कामेश्वर योगी द्वारा शिलान्यास कराया गया।

1990: आडवाणी ने शुरू की रथ यात्रा आंदोलन को दी धारा

सितंबर 1990 को लाल कुण्ड आडवाणी रथ यात्रा लेकर निकले। इस यात्रा ने राम जन्मभूमि आंदोलन को और धारा दी दी। आडवाणी गिरफ्तार हुए। गिरफ्तारी के साथ केंद्र में सता परिवर्तन भी हुए।

1992: विवादित ढांचा गिरा, कल्याण सरकार बर्खास्त

6 दिसंबर 1992 को अयोध्या पहुंचे हजारों कारसेवकों ने विवादित ढांचा गिरा दिया। इसकी जगह इसी दिन शाम को अस्त्रायी मंदिर बनाकर पूजा-अर्चना शुरू कर दी। केंद्र की तकालीन पीढ़ी नरसिंह सरकार ने राज्य की कार्यपालिका द्वारा धर्मस्थल पर खर्खास्त कर दिया। जन्मभूमि थाना में ढांचा ध्वंस मामले में भाजपा के कई नेताओं ने समेत हजारों लोगों पर मुकदमा दर्ज कर दिया गया।

1993: दर्थन-पूजन की मिली अनुमति

बाबरी ढहाए जाने के दो दिन बाद 8 दिसंबर 1992 को अयोध्या में कार्यपाल गांगा था। वर्कीन द्वारा लगाया गया विवादित ढांचा गिरा दिया। 7 जनवरी 1993 को केंद्र सरकार ने ढांचा गाले स्थान व कल्याण सिंह सरकार द्वारा न्यायालय को दी गई भूमि सहित यहां पर कुल 67 एकड़ भूमि का अधिग्रहण कर लिया।

2002: हाईकोर्ट में शुरू हुई मालिकाना हक पर सुनवाई

अप्रैल 2002

बर्फ ने की वित्तकारी



अनंतनाग: जमू और कश्मीर के अनंतनाग में सर्दियों की एक सुबह, बर्फ से ढकीं हड्डों की शाखाएं और पत्तियां।

वर्ल्ड ब्रीफ

स्लोवेनिया: इच्छामृत्यु को खारिज किया

लुबिलियाना। स्लोवेनिया के नगरियों ने रविवार को एक जनमत संघर्ष में उस कानून को खारिज कर दिया, जो लाइजेंस बीमारी से पीड़ित लोगों को अनान जीन समाप्त करने की अनुमति देता था। चुनाव प्राधिकारियों द्वारा सारी प्रारंभिक परिणामों में यह जाकरी का उपर्युक्त परिणाम था। लाभग्रह पूरी हो चुकी मतभगाना के अनुसार, कर्वी 53 प्रतिशत मतदाताओं ने इस कानून के खिलाफ मतदान दिया जबकि लगभग 46 प्रतिशत ने इसके पक्ष में वोट दिया। चुनाव आयग में यह उन्नत सोनर और रडार प्रणाली हो चुकी है। आइएनएस माहे की विशेषताओं, क्षमताओं और निमंण के बारे में।

कनाडा अपने नागरिकता कानून में करेगा संशोधन, मिली शाही मंजूरी

इस कदम से वहां निवासित भारतीय मूल के परिवारों को लाभ मिलने की संभावना।

नागरिकता अधिनियम को और अधिक समावेश बनाने की पहल

आटावा, एजेंसी

कनाडा ने वंश-आधारित नागरिकता कानून को आधुनिक बनाने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया है। इस अधिनियम में संशोधन करने वाले विधेयक को शाही मंजूरी मिल गई है। इस कदम से का असर भारतीय मूल के हजारों परिवारों पर पड़ने की संभावना है।

कनाडा सरकार द्वारा शुक्रवार को जारी एक बयान में कहा गया है कि नागरिकता अधिनियम (2025) में संशोधन करने वाले विधेयक से-3 को शाही संस्कृति मिल गई है। इसमें कहा गया कि यह नागरिकता अधिनियम को और अधिक समावेश बनाने और कनाडाई नागरिकता के मूल्य को बनाए रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पथर है।

बयान में कहा गया है कि नए कानून के लागू होते ही, उन सभी लोगों को कनाडाई नागरिकता प्रदान की जाएगी, जो विधेयक के प्रभाव में आने से पहले पैदा हुए हैं और जो प्रथम-पीढ़ी की सीमा या पिछले कानूनों के पुराने प्रवासीनों के कारण नागरिक नहीं होंगे।

चीन ने अरुणाचल की महिला के पासपोर्ट को अवैध बताया

बीजिंग, एजेंसी

भारत और चीन के रिश्ते को लेकर कई लोग सकारात्मक रूप खखते हैं, लेकिन हाकीकत ये है कि चीन अपने मकसद के साथ आगे बढ़ रहा है। भारत को एक महिला को शांघाई एयरपोर्ट पर 18 घंटे तक इस्पालिए बिटाकर रखा गया, क्योंकि वो अरुणाचल की रहने वाली थी।

भारतीय महिला ने आरोप लाया है कि चीनी अधिकारियों ने उसका भारतीय पासपोर्ट मानने से इनकार कर दिया, जिसके बाद उसे शांघाई एयरपोर्ट पर 18 घंटे से ज्यादा समय तक रोके रखा गया।

अगले साल भारत आएंगे कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी

जोहनिसबर्बर। कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी अगले साल भारत की यात्रा करेंगे। दक्षिण अफ्रीका में जी-20 शिखर सम्मेलन से इन्हरे दिक्षिणीय वाता के बाद प्रधानमंत्री रस्ते-मोटी ने कानून को भारत आगे ना निमंत्रित दिया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। कनाडा के प्रधानमंत्री कार्नी एक बयान में संभवतया जारी एक बदला दिया गया कि प्रधानमंत्री कार्नी ने 2026 की शुरुआत में भारत आगे ना निमंत्रित करेंगे। इसमें कहा गया कि दोनों नेताओं ने वार्ता के दौरान व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और ऊर्जा जैसी क्षेत्रों में संबंधों को आगे बढ़ाव देने के लिए अप्राप्य रूप से बहुताकांक्षा व्यापक अपेक्षा कर रहे हैं। इसके बाद कहा गया कि दोनों नेताओं ने वर्तुलों से बातें, निवेश, कूपी, डिजिटल व्यापार और अन्य व्यापारियों के साथ-साथ अपनी व्युत्पात और स्टीटीक मारक क्षमता के कारण एक मौन शिकारी के रूप में कार्य करता है।

सहमति व्यक्त की। इसमें कहा गया कि मोटी और कार्नी ने मंत्रीयों और व्यापारी समुदाय सहित नियमित पारस्परिक उच्चस्तरीय यात्राओं के महत्व पर सहमति व्यक्त की। कार्नी ने दोनों देशों के बीच कानून लागू करने को लेकर वार्ता में हो रही प्रगति का भी ख्यात किया। वर्ष 2023 में कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जिरिन ट्रॉप द्वारा हरादीप सिंह निजराज की हत्या में भारत का हाथ होने के आरोपी के बाद भारत-कनाडा संबंध बेहद खराब हो गए थे।

बन पाए थे। कनाडाई वंशानुक्रम से नागरिकता पर पहली-पीढ़ी की सीमा वर्ष 2009 में लागू की गई थी। इसका अर्थ है कि यदि कोई बच्चा कनाडाई नागरिकता के बाहर पैदा हुआ या गोद लिया गया है, तो वह वंशानुक्रम से कनाडाई नागरिक नहीं माना जाएगा, यदि उसके कनाडाई माता-पिता भी कनाडा के बाहर ही पैदा हुए हों या गोद लिए गए हों। मामले से परिवर्तित लोगों का कहना है कि इस सीमा के कारण अनेक भारतीय मूल के कनाडाई लोगों के लिए समस्या उत्पन्न हो गई, जिनके बच्चे देश से

बाहर पैदा हुए थे। बयान में कहा गया है कि नया कानून विदेश से जन्मे या गोद लिए गए कनाडाई माता-पिता को इस विधेयक के लागू होने की विशेष या उसके बाद कनाडा के बाहर जन्मे या गोद लिए गए अपने बच्चे को नागरिकता देने की अनुमति देगा, बास्तें कि उनका कनाडाई माता-पिता भी कनाडा के बाहर ही पैदा हुए हों या गोद लिए गए हों। मामले से बदलते हुए और जो व्यापारी समुदाय सहित नियमित पारस्परिक उच्चस्तरीय यात्राओं के महत्व पर सहमति व्यक्त की। कार्नी ने दोनों देशों के बीच कानून लागू करने को लेकर वार्ता में हो रही प्रगति का भी ख्यात किया। वर्ष 2023 में कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जिरिन ट्रॉप द्वारा हरादीप सिंह निजराज की हत्या में भारत का हाथ होने के आरोपी के बाद भारत-कनाडा संबंध बेहद खराब हो गए थे।

बनाए गए थे। कनाडाई वंशानुक्रम से नागरिकता पर पहली-पीढ़ी की सीमा वर्ष 2009 में लागू की गई थी। इसका अर्थ है कि यदि कोई बच्चा कनाडाई नागरिकता के बाहर पैदा हुआ या गोद लिया गया है, तो वह वंशानुक्रम से कनाडाई नागरिक नहीं माना जाएगा, यदि उसके कनाडाई माता-पिता भी कनाडा के बाहर ही पैदा हुए हों या गोद लिए गए हों। मामले से बदलते हुए और जो व्यापारी समुदाय सहित नियमित पारस्परिक उच्चस्तरीय यात्राओं के महत्व पर सहमति व्यक्त की। कार्नी ने दोनों देशों के बीच कानून लागू करने को लेकर वार्ता में हो रही प्रगति का भी ख्यात किया। वर्ष 2023 में कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जिरिन ट्रॉप द्वारा हरादीप सिंह निजराज की हत्या में भारत का हाथ होने के आरोपी के बाद भारत-कनाडा संबंध बेहद खराब हो गए थे।

बनाए गए थे। कनाडाई वंशानुक्रम से नागरिकता पर पहली-पीढ़ी की सीमा वर्ष 2009 में लागू की गई थी। इसका अर्थ है कि यदि कोई बच्चा कनाडाई नागरिकता के बाहर पैदा हुआ या गोद लिया गया है, तो वह वंशानुक्रम से कनाडाई नागरिक नहीं माना जाएगा, यदि उसके कनाडाई माता-पिता भी कनाडा के बाहर ही पैदा हुए हों या गोद लिए गए हों। मामले से बदलते हुए और जो व्यापारी समुदाय सहित नियमित पारस्परिक उच्चस्तरीय यात्राओं के महत्व पर सहमति व्यक्त की। कार्नी ने दोनों देशों के बीच कानून लागू करने को लेकर वार्ता में हो रही प्रगति का भी ख्यात किया। वर्ष 2023 में कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जिरिन ट्रॉप द्वारा हरादीप सिंह निजराज की हत्या में भारत का हाथ होने के आरोपी के बाद भारत-कनाडा संबंध बेहद खराब हो गए थे।

बनाए गए थे। कनाडाई वंशानुक्रम से नागरिकता पर पहली-पीढ़ी की सीमा वर्ष 2009 में लागू की गई थी। इसका अर्थ है कि यदि कोई बच्चा कनाडाई नागरिकता के बाहर पैदा हुआ या गोद लिया गया है, तो वह वंशानुक्रम से कनाडाई नागरिक नहीं माना जाएगा, यदि उसके कनाडाई माता-पिता भी कनाडा के बाहर ही पैदा हुए हों या गोद लिए गए हों। मामले से बदलते हुए और जो व्यापारी समुदाय सहित नियमित पारस्परिक उच्चस्तरीय यात्राओं के महत्व पर सहमति व्यक्त की। कार्नी ने दोनों देशों के बीच कानून लागू करने को लेकर वार्ता में हो रही प्रगति का भी ख्यात किया। वर्ष 2023 में कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जिरिन ट्रॉप द्वारा हरादीप सिंह निजराज की हत्या में भारत का हाथ होने के आरोपी के बाद भारत-कनाडा संबंध बेहद खराब हो गए थे।

बनाए गए थे। कनाडाई वंशानुक्रम से नागरिकता पर पहली-पीढ़ी की सीमा वर्ष 2009 में लागू की गई थी। इसका अर्थ है कि यदि कोई बच्चा कनाडाई नागरिकता के बाहर पैदा हुआ या गोद लिया गया है, तो वह वंशानुक्रम से कनाडाई नागरिक नहीं माना जाएगा, यदि उसके कनाडाई माता-पिता भी कनाडा के बाहर ही पैदा हुए हों या गोद लिए गए हों। मामले से बदलते हुए और जो व्यापारी समुदाय सहित नियमित पारस्परिक उच्चस्तरीय यात्राओं के महत्व पर सहमति व्यक्त की। कार्नी ने दोनों देशों के बीच कानून लागू करने को लेकर वार्ता में हो रही प्रगति का भी ख्यात किया। वर्ष 2023 में कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जिरिन ट्रॉप द्वारा हरादीप सिंह निजराज की हत्या में भारत का हाथ होने के आरोपी के बाद भारत-कनाडा संबंध बेहद खराब हो गए थे।

बनाए गए थे। कनाडाई वंशानुक्रम से नागरिकता पर पहली-पीढ़ी की सीमा वर्ष 2009 में लागू की गई थी। इसका अर्थ है कि यदि कोई बच्चा कनाडाई नागरिकता के

